अध्यात्म एवं नैतिकता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति अध्यात्म एवं नैतिकता के मूल्यों से संवलित है। हमारी संस्कृति नैतिक आचार विचार व व्यवहार का पालन करने के लिए सदैव प्रेरित करती रहती है। यहां का प्रत्येक कार्य संस्कार जन्य है। जन्म से लेकर के मृत्यु पर्यन्त संस्कारों की एक श्रृंखला है जिससे बद्ध होकर के जीवन अध्यात्म एवं नैतिक युक्त हो जाता है। अध्यात्म का अर्थ है आत्मा में रमण करना। यहां पर सभी जीवों में आत्म–दर्शन का बोध बताया गया है। अणु से लेकर विराट् तक सर्वत्र आत्मा का दर्शन करना चाहिए यह भारतीय संस्कृति का संदेश है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। आत्म स्वातन्त्र्य मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट संपदा है। व्यक्ति अपने आप में एक विचार जगत लेकर चलता है, उसकी प्रवृत्तियाँ निरन्तर विचारों से प्रभावित होती है। परापेक्षा और पर निर्भरता कुछ ऐसी मानसिक कमजोरियाँ हैं जो प्रायः आम व्यक्ति में पाई जाती हैं। व्यक्ति पर निर्भर होकर एक विलक्षण निश्चिंतता का अनुभव करता है। सादगी का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में अपने आपको "जो वह है उससे भी अधिक श्रेष्ठ और प्रशंसनीय" दिखाई देने का भाव विद्यमान रहता है। यह भाव इतना श्रेष्ठ और व्यापक होता है कि इसको समाप्त कर देना अत्यंत दुष्कर होता है। इसके अनेक कारण हो सकते है, सबसे बड़ा कारण तो यह है कि प्रारंभिक स्तर पर इसे कोई बुरा भाव नहीं समझा जाता। इतना ही नहीं अधिकतर तो इस भाव को चारों तरफ से प्रशंसा ही मिलती है, इसका परिणाम यह होता है कि भाव व्यक्ति के मन में दिनों–दिन प्रगाढ़ हेाता जाता है और इतना अधिक फैल जाता है कि जिसे प्रारंभ में अच्छाई समझा गया वह भोंडा प्रदर्शन मात्र बनकर रह जाता है। प्रदर्शनेच्छा से अभिभूत मानव अपने खान–पान, पहनावे से लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जहाँ तक की पारस्परिक व्यवहारों में भी एक नाटक ही करता रहता है, उसकी सारी बुद्धि केवल एक बात की तरफ केन्द्रित हो जाती है कि वह अच्छा कैसे दिखाई दे। व्यक्ति अपने आप में कैसा भी है वह उसकी वास्तविकता है। जब वास्तविकता को छुपाकर केवल दिखावा करने की प्रवृत्ति चल पड़ती है तो यह एक ऐसी

प्रवृत्ति है कि उसका अंत ही कठिन हो जाता है। इनमें कोई संदेह नहीं कि मानव ने अपने रहन–सहन और व्यवहारों की नग्नता को ओट देने के लिए एक सभ्यता का निर्माण किया है। सभ्यता के लोक व्यापी प्रतिमान होते हैं और उन प्रतिमानों की सुरक्षा करना प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो जाता है। सभ्यता के प्रतिमानों की सुरक्षा को हम प्रदर्शन नहीं कह सकते। प्रदर्शन रूप प्रतिमान वे होते हैं जिनमें सभ्यता के भाव मुख्य नहीं होकर प्रदर्शन के भाव तीव्र होते हैं। अपने ठाठ–पाट वैभव और देह को अन्य व्यक्तियों के सामने अलंकृत करके प्रस्तुत करना, वह प्रदर्शन है जिसे आम व्यक्ति साश्चर्य देखा करे और उस तरफ आकर्षित हों किन्तु यथार्थ में वह भव्यता जो दिखाई देती है, होती नहीं है। जीवन की गतिविधि में जो सरल सहज शास्त्रोक्त है, वह उपादेय है ही। उसे हम आडम्बर नहीं कह सकते किन्तु जो स्वोपज्ञ आचार है तथा जिन आचार बिन्दुओं को आज कि स्थिति में हम नहीं पाल सकते उन्हें विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हुए सहज शुद्ध जीवन जीना ही वास्तविक विचार–दर्शन है, जो व्यक्ति को आत्म शांति प्रदान करता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। नैतिक मूल्यों में करूणा, त्याग, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि मूल्यों का समावेश है। जिनका पालन करने से जीवन में शांति प्राप्त होती है। करूणा मानवीय संवेदना का एक ऐसा भाव है जिसमें मानव का हृदय विगलित होता चला जाता है। करुणा भाव भी मानव को अभिभूत कर देता है। उसकी उत्प्रेरणा भी बहुत प्रबल होती है। करुणा भाव किसी राग भाव का अंग नहीं होकर एक स्वतंत्र आत्म भाव है। राग भाव किसी परिचित या चिरपरिचित के साथ ही हो पाता है किन्तु करुणा भाव के लिए कोई शर्त नहीं है। करुणा भाव कहीं भी, यहां तक कि नितांत अपरिचित प्राणी को भी पीड़ा–ग्रस्त देखकर उभर सकता है। वह दुःखी के दुःख को अपने आप में अनुभव करता है। यह संवेदना करुणा भाव से ही जग पाती है। करुणा वस्तुतः एक आत्म भाव है। आर्तग्रस्त प्राणी तो निमित्त मात्र होता है। सरल और सौम्य मानसिकता में करुणा भाव का निश्चित अस्तित्व पाया है। परमार्थ की आराधना में करुणा भाव का सर्वाधिक महत्व है। सच पूछा जाए तो करुणा के बिना परमार्थ हो ही नहीं सकता। आत्म ज्ञान से जो शिक्षा जुड़ी हुई नहीं है वह ज्ञान नहीं, अज्ञान है। अज्ञान का अर्थ नहीं जानना ही नहीं है, नितान्त बाह्य, भौतिक ज्ञान भी अज्ञान स्वरूप ही है। अज्ञान इतना

समर्थ तो हो सकता है कि वह आपका पेट भर दे या परिवार का निर्वाह करा दे किन्तु शान्ति जिसे कहते हैं, जीवन का रहस्य ज्ञान जिसे कहते हैं वह प्रदान करने में आत्मज्ञान ही सार्थक होते हैं। भौतिक ज्ञान अधिकतर रावण और कंस तैयार कर रहा है। आत्म ज्ञान ही मानव को महामानव महिमा से मण्डित कर सकता है। सत्स्वरूप ज्ञान के अभाव में आत्मा अपने सदसद् प्रवृत्ति का निर्णय नहीं कर पाता। विभाव अर्थात् आत्मा के वे भाव जो आत्म स्वरूप से भिन्न हैं। विभावों से विकृत परिणति बनती है और वही घोर बन्धन का कारण होकर आत्मा के लिए घोर दुःखों का निर्माण करती है। विभाव न हो तो अनन्त सुख स्वरूपी आत्मा के लिए मोक्ष का द्वार सदा खुला रहे।